IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय गौरव के महान गायक :मैथिलीशरण गुप्त

डा0 परमजीत कौर,
(एसोसिएट प्रोफेसर)
हिन्दी विभाग, बरेली कालेज, बरेली।
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

शोध सार: जब वैचारिकता तथा निष्ठाओं में राष्ट्र को लेकर घटती चिंता और क्षुद्र राजनीतिक एवं निजी स्वार्थो के धुएं की धुंध से सोच कुंठित हो रही हो, ऐसे वातावरण में सहसा ही राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त स्मरण हो उठते हैं। राष्ट्र को लेकर उनकी चेतना पारम्परिक 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को साथ लेकर चलती है, लेकिन राष्ट्र पर यदि संकट के बादल मंडरा रहे हों तब मानवता से श्रेष्ठ उद्दाम राष्ट्रीयता होती है। गुप्त जी का काव्य एक ओर वैष्णव भावना से अनुप्राणित था, तो साथ ही जागरण एवं सुधार युग की राष्ट्रीय चेतना से भी परिपोषित था। अन्ध विश्वासों एवं थोथे आदर्शो से इतर उन्होने भारतीय संस्कृति के नव्य रूप का समर्थन किया। एक समुन्नत, सुगठित एवं सशक्त राष्ट्रीय नैतिकता से युक्त आदर्श समाज, मर्यादित एवं स्नेहसिक्त परिवार एवं उदात्त चरित्र वाले नागरिकों के निर्माण की दिशा में उन्होनें आख्यानों को अपने काव्य का वर्ण्य विषय बनाकर, उनके सभी पात्रों को एक नूतन अर्थवत्ता प्रदान की। राष्ट्रीय नवजागरण के दौर मे अंहिसावादी गाँधीवादी आन्दोलनों के साथ–साथ क्रान्तिकारी आन्दोलनों में भी स्त्रियों ने अपनी सहभागिता प्रस्तुत की थी। इस बदली हुई विचारधारा का प्रभाव मैथिलीशरण गुप्त जी की रचनाधर्मिता पर भी पड़ा। उन्होनें अपनी अनेक कृतियों के माध्यम से युगों–युगों से चिर उपेक्षिता नारी पात्रों के दुःख–दर्द–पीड़ा को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की। 'साकेत', 'यशोधरा', 'हिडिम्बा' जैसे काव्यग्रन्थ उनकी नारी भावना को विस्तार से व्याख्यायित करते हैं। साहित्य की प्रयोजनशीलता को दृष्टिगत करते हुए मैथिलीशरण गुप्त को आधुनिक काल का तुलसीदास भी कहा जा सकता है क्योंकि मध्यकाल के कवि तुलसी का लोकनायकत्व आधुनिक युग में गुप्त जी में ही उपलब्ध होता है। वस्तुतः अतीत की विरासत को लेकर नवीन के निर्माण में जिस निपुणता के साथ मैथिलीशरण गुप्त अग्रसर हुए, उसे हिन्दी भाषा के क्षेत्र में विरल ही माना जायेगा।

मूलशब्द: राष्ट्र चेतना, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र, वसुधैव कुटुम्बकम

प्रस्तावना

जब वैचारिकता तथा निष्ठाओं में राष्ट्र को लेकर घटती चिंता और क्षुद्र राजनीतिक एवं निजी स्वार्थो के धुएं की धुंध से सोच कुंठित हो रही हो, ऐसे वातावरण में सहसा ही राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त स्मरण हो उठते हैं। तीन अगस्त 1886 को चिरगाँव, झाँसी में जन्में गुप्त जी अपनी सादगी तथा सरलता के लिए जितना विख्यात रहे, उतनी ही अपनी राष्ट्रीय भावना युक्त कविताओं के लिए। राष्ट्र को लेकर उनकी चेतना पारम्परिक 'वसुधौव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को साथ लेकर चलती है लेकिन जब लगता है कि करूणाभाव राष्ट्र को कमजोर कर सकता है तो वे निज गौरव के प्रति आग्रहीभाव रखने से स्वयं भी नहीं चूकते। राष्ट्र चेतना के सजग प्रहरी गुप्त जी की मान्यता थी कि राष्ट्रीयता की प्रथम शर्त मानवता है, लेकिन राष्ट्र पर यदि संकट के बादल मंडरा रहे हों तब मानवता से श्रेष्ठ उद्दाम राष्ट्रीयता होती है अपनी कविता 'नर हो न निराश करो मन को' में राष्ट्रकवि राष्ट्र को लेकर अपनी भावना का उद्बोधन कुछ इस प्रकार करता है–

'' निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
हम भी कुछ हैं, यह ध्यान रहे।
मरणोत्तर गुंजित ज्ञान रहे,
सब जाय अभी पर मान रहे ।
कुछ हो न तजो निज साधन को,
नर हो, न निराश करो मन को।''

लेकिन गुप्त जी की राष्ट्रीय चेतना संकुचित नहीं थी। वे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा सर्वे भवन्तु सुखिनः' की अवधारणा पर विश्वास करते थे। उन्होने माँ भारती के विषय में लिखा है–

''भारत माता का मन्दिर यह, समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ, पावे सभी प्रसाद यहाँ।
जाति–धर्म या सम्प्रदाय का नहीं भेद–व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर सबका सम सम्मान यहाँ।''

गुप्त जी का काव्य एक ओर वैष्णव भावना से अनुप्राणित था, तो साथ ही जागरण एवं सुधार युग की राष्ट्रीय चेतना से भी परिपोषित था। महात्मा गाँधी के भारतीय राजनीति में आने से पूर्व ही गुप्त जी का युवामन 'लाल' 'बाल' 'पाल' की गर्म विचारधारा से प्रभावित हो चुका था। किन्तु बाद में गाँधीवाद के व्यवहारिक पक्ष एवं सुधारवादी अन्दोलनों ने उन्हें प्रेरित किया। अन्ध विश्वासों एवं थोथे

आदर्शों से इतर उन्होने भारतीय संस्कृति के नव्य रूप का समर्थन किया। एक समुन्नत, सुगठित एवं सशक्त राष्ट्रीय नैतिकता से युक्त आदर्श समाज, मर्यादित एवं स्नेहसिक्त परिवार एवं उदात्त चरित्र वाले नागरिकों के निर्माण की दिशा में उन्होनें आख्यानों को अपने काव्य का वर्ण्य विषय बनाकर, उनके सभी पात्रों को एक नूतन अर्थवत्ता प्रदान की। उनकी महान कृति 'साकेत' के राम कहते हैं–

''सन्देश यहाँ मै नहीं स्वर्ग का लाया
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।''

'साकेत' के नायक लक्ष्मण भी जीवन की प्रत्येक स्थिति में लोकोपकार पर बल देते हैं। उनकी साधना 'शिवम्' की साधना है। लक्ष्मण के माध्यम से गुप्त जी की ही अर्न्तभावना मुखरित हुई है।

''मैं मनुष्यता को सुरत्व की, जननी भी कह सकता हूँ।
किन्तु पतित को पशु कहना भी, कभी नहीं सह सकता हूँ।।

जिस युग में राम के व्यक्तित्व को ऐतिहासिक महापुरूष या मर्यादा पुरूषोत्तम तक सीमित मानने का आग्रह चल रहा था तब गुप्त जी की वैष्णव भक्ति ने आकुल होकर पुकार की थी–

''राम, तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या?
विश्व में रमे हुए नहीं सभी कही हो क्या?
तब मै निरीश्वर हूँ, ईश्वर क्षमा करे,
तुम न रमो तो मन तुम में रमा करे।''

गुप्त जी अपने काव्य द्वारा जनता को प्रजातन्त्र के वास्तविक अर्थ का बोध कराते हुए उत्साहित करते हैं–

''राजा प्रजा का पात्र है, वह एक प्रतिनिधि मात्र है।
यदि वह प्रजा पालक नहीं, तो त्याज्य है।''
तथा
''जग को दिखा दो यह कि अब भी हम सजीव सशक्त हैं।
रखते अभी तक नाड़ियों में पूर्वजों का रक्त हैं।''

गुप्त जी की मान्यता थी कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो बहुसंख्य वर्ग की भाषा होने के कारण समूचे राष्ट्र को एकता के बन्धन में पिरोकर विदेशी शासन से मुक्ति प्रदान कर सकती है। गुप्त जी की अमर कृति 'भारत–भारती' ने विदेशी शासन से मुक्ति हेतु समूचे राष्ट्र को उद्‌बोधन तथा प्रेरित करने का महान कार्य किया। 'भारत–भारती' के प्रकाशन के साथ ही गुप्त जी को जनमानस में राष्ट्रभक्ति की अलख जलाने वाले सर्वाधिक शक्तिशाली कवि के रूप, में प्रतिष्ठा मिली। 'स्वदेश संगीत' 'अनध' 'द्वापर', 'साकेत' 'वैतालिकी', अंजलि और अर्ध्य, 'जय भारत', गुरूकुल' इत्यादि काव्य कृतियों के माध्यम से उन्होनें भारतवासियों में राष्ट्रप्रेम तथा स्वाभिमान जगाने का प्रयास किया है।

राष्ट्रीय नवजागरण के दौर में नारी स्वातन्त्रय की भावना को भी पुष्टि मिली। अंहिसावादी गाँधीवादी आन्दोलनों के साथ–साथ क्रान्तिकारी आन्दोलनों में भी स्त्रियों ने अपनी सहभागिता प्रस्तुत की थी। इस बदली हुई विचारधारा का प्रभाव मैथिलीशरण गुप्त जी की रचनाधर्मिता पर भी पड़ा। उन्होनें अपनी अनेक कृतियों के माध्यम से युगों–युगों से चिर उपेक्षिता नारी पात्रों के दुःख–दर्द–पीड़ा को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की। 'साकेत', 'यशोधरा', 'हिडिम्बा' जैसे काव्यग्रन्थ उनकी नारी भावना को विस्तार से व्याख्यायित करते हैं। मैथिलीशरण गुप्त जी की मान्यता थी कि किसी भी समाज–राष्ट्र तथा परिवार के विकास में नारी की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। पुत्र को संस्कार देने, उसे जीवन की विकट परिस्थितियों से जूझने के लिये तैयार करने एवं उसकी उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करने में माँ की भूमिका अप्रतिम होती है। नारी अर्धागंनी के रूप में अपने पति का संबल बनती है। नारी ही मानवीय आदर्शो की संवाहिका तथा प्रेरणाशक्ति होती है। मैथिलीशरण गुप्त जी ने 'साकेत' में सीता को राम की तथा उर्मिला को लक्ष्मण की प्रेरणाशक्ति माना है। साकेत की उर्मिला लक्ष्मण के मन की बात बिना कहे ही समझ जाती है–

''कहा उर्मिला ने हे मन! तू प्रिय–पथ का विध्न न बन।
आज स्वार्थ है त्याग भरा। हो अनुराग विराग भरा।।''

'साकेत' की नायिका 'उर्मिला' स्वाभिमानी, जागरूक नागरिका, शक्तिरूपा वीरागंना है। इसी प्रकार 'साकेत में गुप्त जी ने सुमित्रा, सीता, मन्थरा, कैकेयी सदृश नारी पात्रों को युगानुकूल नव्य उद्‌भावनाँ दी। साकेत में यदि केन्द्रीय चरित्र, उर्मिला एवं उसकी विरह वेदना का चित्रण हुआ तो 'यशोधरा' में गुप्त जी ने गौतम बुद्ध, राहुल तथ यशोधरा की कथा को आधार बनाकर 'यशोधरा' को जीवन्त किया है। यशोधरा पर तत्कालीन जागरण का प्रभाव और भी अधिक मुखरित दिखाई देता है। गौतम सत्यान्वेषण हेतु सब कुल त्याग कर चले गये। पतिपरित्यक्ता तथा नन्हें से शिशु राहुल की माता यशोधरा पर इसका जो मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा, उसे वह इस प्रकार व्यक्त करती है–

''सिद्धि हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात।
पर चोरी–चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते
तो क्या मुझको वे अपनी पथ बाधा ही पाते।''

लेकिन अन्ततः यशोधरा सिद्धार्थ के घर छोड़कर चले जाने पर उनके निर्णय का सम्मान करती हैं एवं सिद्धार्थ को आत्मग्लानि से बचाकर उनके महात्मा बुद्ध बनकर एवं मानव सेवा के मार्ग पर चलने के कार्य को सुगम बनाती है–

''जाओं नाथ, अमृत लाओ, मुझमें मेरा पानी,
चेरी ही मैं बहुत तुम्हारी, मुक्ति तुम्हारी रानी।
प्रिय तुम तपो, सहूँ मैं भरसक, देखूँ बस हे दानीं।
कहाँ तुम्हारी गुण–गाथा में, मेरी करूण कहानी?''

यहाँ तक कि अन्त में स्वयं भगवान बुद्ध को अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु यथोधरा के द्वार पर आना ही पड़ता है। वे यशोधरा की शक्ति और उसके धैर्य का गुणगान करते हुए, उसका महत्व स्वीकार करते हैं

''मानिनी मान तजो, लो रही तुम्हारी बान,
दानिनी आया स्वयं द्वार पर, यह भव तत्र भवान्।।''

इस प्रकार गुप्त जी की नारी भावना में उनके हृदय की विशालता एवं उदारता का परिचय मिलता है। गुप्त जी ने नारी के न्यायोचित अधिकार की माँग की है। शकुन्तला, सैरन्ध्री, सीता, उर्मिला, कैकेयी, मांडवी, राधा, कुब्जा, हिडिम्बा आदि नारी पात्रों के माध्यम से ही उन्होनें नारी के त्यागमय, प्रेरक तथा उज्जवल पक्ष को उद्घाटित किया है। गुप्त जी की यह नारी भावना न तो रीतिकालीन वासना से युक्त है एवं न ही भक्तिकालीन रागवृत्ति से पूर्ण। नारी को प्रेम, पवित्रता एवं शक्ति का समन्वित रूप मानते हुए वे लिखते हैं–

''हैं प्रीति और पवित्रता की मूर्ति–सी वे नारियाँ,
हैं गेह में वे शक्तिरूपा, देह में सुकुमारियाँ।''

यशोधरा, उर्मिला, सीता, हिडिम्बा, द्रौपदी आदि नारी पात्र विरही होकर भी, मध्यकालीन विरहणियों की तरह दीन–हीन होकर अश्रु नहीं बहाते वरन विरह का दुख उन्हें द्रवित कर विश्वमानवता के प्रति संवेदनशील तथा कर्मठ बनाकर जनता के साथ तादात्म्य स्थापित करवाता हैं।

उपसंहार

निश्चित रूप से गुप्त जी की नारी चेतना पारम्परिक नहीं है वरन वे नारी को शिक्षिता, आत्मसम्मानी स्वाभिमानी देखना चाहते हैं तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में उसकी सक्रिय भूमिका के पक्षधर है। साहित्य की प्रयोजनशीलता को दृष्टिगत करते हुए मैथिलीशरण गुप्त को आधुनिक काल का तुलसीदास भी कहा जा सकता है क्योंकि मध्यकाल के कवि तुलसी का लोकनायकत्व आधुनिक युग में गुप्ता जी में ही उपलब्ध होता है। वस्तुतः अतीत की विरासत को लेकर नवीन के निर्माण में जिस निपुणता के साथ मैथिलीशरण गुप्त अग्रसर हुए, उसे हिन्दी भाषा के क्षेत्र में विरल ही माना जायेगा। इसी निमित्त मॉ भारती के अमर गायक एवं नारी चेतना के प्रबल समर्थक, प्रखर चिन्तक राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का काव्य अपने उदात्त विचारदर्शन तथा राष्ट्रीय गौरव गाथा से अभिमंडित होने के कारण सदैव पूज्यनीय रहेगा।

सन्दर्भ सूची–

1– गुप्त जी की काव्य साधना–डॉ0 उमाकान्त गोयल
2– साकेत : एक अध्ययन– डॉ0 नगेन्द्र
3– हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष– शिवदान सिंह चौहान
4– मैथिलीशरण गुप्त– विकीपीडिया
5– मैथिलीशरण गुप्त– भारतकोश
6– मैथिलीशरण गुप्त की नारी भावना–हिन्दी कुंज com
7– मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी–